
aglasem.com
कक्षा १२
समाजशास्त्र
नोट्स
सांस्कृतिक परिवर्तन
KEY NOTES AND IMPORTANT
QUESTIONS WITH ANSWERS

पाठ 2

सांस्कृतिक परिवर्तन

मुख्य बिन्दु

1. सांस्कृतिक परिवर्तन को चार प्रक्रियाओं के रूप में देखा जा सकता है।

- संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, लोकिकीकरण अथवा निरपेक्षीकरण, पश्चिमीकरण
- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया उपनिवेशवाद से पहले भी थी लेकिन बाकी की तीन प्रक्रियाएं उपनिवेशवाद के बाद की देन है।

2. 19 वीं और 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुए समाज सुधार आंदोजन:-

- समाज सुधार आन्दोजन उन चुनौतियों के जवाब थे, जिन्हें भारत के लोग अनुभव कर रहे हो जैसे- सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा पुनर्विवाह तथा जाति प्रथा। राजा राम मोहन राय ने सतीप्रथा का विरोद्ध किया।
- समाज शास्त्री सतीश सबर बाल ने औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों के लिए निम्न पहलुओं को बताया।

(अ) **संचार माध्यम :** प्रैस, माईक्रोफोन, जहाज, रेलवे आदि। वस्तुओं के आवागमन में नवीन विचारों को तीव्र गति प्रदान करने में सहायता प्रदान की।

(ब) **संगठनों के स्वरूप :** बंगाल में ब्रहम समाज और पंजाब में आर्य समाज की स्थापना हुई। मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्र स्तरीय संस्था अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम की स्थापना हुई।

(स) विचार की प्रकृति- स्वतंत्रता तथा उदारवाद के नए विचार, परिवार संरचना, विवाह सम्बन्धी नियम, संस्कृति में स्वचेतन के विचार, शिक्षा के मूल्य।

- आधुनिक तथा पारम्परिक विचारधाराओं में वाद-विवाद हुए। ज्योतिबाफूले ने आर्यो से पहले को अच्छा काल माना। बाल गंगाधर तिलक ने आर्ययुग की

प्रशंसा की, जहांआरा शाह नवाज़ ने अखिल भारतीय मुस्लिम महिला सम्मेलन में बहु-विवाह की कुप्रथा के विरूद्ध भाषण किया तथा इसे कुरान की मूल भावनाओं के विरूद्ध बताया।

- समाज सुधारों के विरोधियों ने भी अपनी रूढ़िवादी बातों को उठाया। जैसे- सतीप्रथा के समर्थन में बंगाल में धर्म सभा का गठन हुआ।
- भारत में संरचनात्मक तथा सांस्कृतिक विविधिता है।
- आधुनिक ज्ञान व शिक्षा के कारण शिक्षित भारतीयों को उपनिवेशवाद में अन्याय और अपमान का अहसास हुआ।

3. **संस्कृतिकरण:-**

- संस्कृतिकरण एम.एस. श्री निवास के अनुसार वह प्रक्रिया जिसमें निम्न जाति या जनजाति, उच्च जाति (द्विज जातियाँ) की जीवन पद्धति, अनुष्ठान मूल्य, आदर्श तथा विचारों का अनुकरण करते हैं। इसके प्रभाव भाषा, साहित्य, विचार-धारा, संगीत, नृत्य, नाटक, अनुष्ठान तथा जीवन पद्धति में देखे जा सकते हैं। यह प्रक्रिया अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से होती है।
- जिन क्षेत्रों में गैर सांस्कृतिक जातियाँ प्रभुत्वशाली थी, वहां की संस्कृति को इन निम्न जातियों ने प्रभावित किया। श्री निवास ने इसे विसंस्कृतिकण का नाम दिया।
- **संस्कृतिकरण की आलोचना:-**
  - सामाजिक गतिशीलता निम्न जाति के स्तरीकरण में उर्ध्वगामी परिवर्तन करती है।
  - उच्च जाति की जीवन शैली उच्च तथा निम्न श्रेणी की जीवन शैली निम्न होने की भावना पाई जाती है।
  - उच्च जाति की जीवन शैली का अनुकरण वांछनीय तथा प्राकृतिक है।
  - यह अवधारणा असमानता तथा अपवर्जन आधारित है।
  - निम्न जाति के प्रति भेदभाव एक विशेषाधिकार है।
  - इसमें दलित समाज के मूलभूत पक्षों को पिछड़ा माना जाता है।
  - लड़कियों को भी असमानता की श्रेणी में नीचे धकेल दिया जाता है।

- जातीय सदस्यता ही प्रतिभा की सूचक बन गई है। यही भावना दलितों में भी आई है। लेकिन फिर भी वे भेदभाव व अपर्वजन के शिकार है।

4. **पश्चिमीकरण**- ब्रिटिश शासन के 150 वर्षों में आए प्रौद्योगिकी, संस्था, विचारधारा, मूल्य परिवर्तनों को पश्चिमीकरण का नाम दिया गया। जीवनशैली एवं चिन्तन के अलावा भारतीय कला तथा साहित्य पर भी पश्चिमी संस्कृति का असर पड़ा है। ऐसे लोग कम ही थे जो पश्चिमी जीवन शैली को अपना चुके थे। इसके अलावा अन्य पश्चिमी सांस्कृतिक तत्वों जैसे नए उपकरणों का प्रयोग, पोशाक, खाद्य-पदार्थ तथा आम लोगों की आदतों और तौर-तरीकों में परिवर्तन आदि थे। मध्य वर्ग के एक बड़े हिस्से के परिवारों में टेलीविजन, फ्रिज, सौफा-सेट, खाने की मेज आदि आम बात है।

- श्री निवासन के अनुसार निम्न जाति के लोग संस्कृतिकरण जबकि उच्च जाति के लोग पश्चिमकरण की प्रक्रिया को अपनाते है।

5. **आधुनिकीकरण:**- प्रारम्भ में आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगिकी ओर उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से था। परन्तु आधुनिक विचारों के अनुसार-सीमित, संकीर्ण स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते है। और सार्वभौमिक दृष्टिकोण यानि पूरा विश्व एक कुटुम्ब है को महत्त्व दिया जाता है।

6. **आधुनिकीकरण और धर्मनिरपेक्षीकरण:**-

- ये धनात्मक तथा अच्छे मूल्यों की ओर झुकाओ

- आधुनिकीकरण का आश्य प्रौद्योगिकरण ओर उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से है। इसका मतलब विकास का वो तरीका जिससे पश्चिमी यूरोप या उत्तर अमेरीका ने अपनाया।

- आधुनिकीकरण का मतलब ये समझ में आता है कि इसके समक्ष सीमित-संकीर्ण-स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते है और सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजीत दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावशाली होता है।

- इसमें उपयोगिता, गणना और विज्ञान की सत्यता को भावुकता, धार्मिक पवित्रता ओर अवैज्ञानिक तत्वों के स्थान पर महत्व दिया जाता है।

- इसके मूल्यों के मुताबिक समूह/संगठन का चयन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि इच्छा के आधार पर होता है।

- धर्मनिरपेक्षीकरण का मतलब ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें धर्म के प्रभाव में कम आती है।
- आधुनिक समाज ज्यादा ही धर्मनिरपेक्ष होता है।

2 अंक प्रश्न

1. 19वीं सदी में समाजसुधारकों ने बहुत से सामाजिक विषयों को उठाया? ये क्या थे?
2. 20वीं सदी के कुछ आधुकि सामाजिक संगठनों के नाम बताइये।
3. निम्न का अर्थ बताइये।
   (अ) संस्कृतिकरण
   (ब) विसंस्कृतिकरण
4. आधुनिकता के विषय में आधारभूत बिन्दु क्या है?
5. पाश्चात्करण (पश्चिमीकरण) तथा धर्म निरपेक्षता में क्या सम्बन्ध है?

4 अंक प्रश्न

1. जाति का धर्म निरपेक्षी करण पर नोट लिखे।
2. समाज सुधार आन्दोलन के मुख्य उद्देश्य एक जैसे थे, फिर भी वे अलग थे। समझाइए।
3. संस्कृतिकरण भेदभाव व असमानता को बढ़ावा देता है। इसका वर्णन करो।
4. ब्राह्मण विरोधी आन्दोलन तथा पिछड़े वर्गों के आन्दोलन का संस्कृतिकरण पर क्या प्रभाव पड़ा।

6 अंक प्रश्न

1. संस्कृतिकरण की विभिन्न स्तरों पर आलोचना हुई है? इसके विषय में विस्तार से बताए।
2. औपनिवेशिक भारत में आधुनिक बदलाव के विषय में कुछ तथ्यों का वर्णन कीजिए।